विनीत बाजपेयी

विनाशकारी

प्रलय

TreeShade Books

आमुख

'वो सब मरने वाले हैं...' मनु स्वयं से बुदबुदाया। 'और मैं भी उनके साथ मर जाऊंगा।'

ये बेचैन आत्माएं, ये युवा पुरुष और महिलाएं, शिशु, वृद्ध और निराश्रित, ये समस्त प्रजाति जिनकी सुरक्षा का मैंने वचन लिया था, चींटियों की तरह मसल जाएंगे।

मनु को अब पहली बार उस कठोर वास्तविकता का अहसास हुआ था, जिसका उसके कंधे पर भार था। सच के इस भयानक पल से पहले तक, वो समुद्री-प्रजाति के रहस्यमयी प्रमुख के विचित्र किंतु दुर्भाग्यपूर्ण आदेश को पूरा करने में डूब गया था।

इस अव्यवस्थित, जुगाड़ू शिल्पकारिता का तेजस्वी युवा नेता विशाल जहाज को एक तरफ झुकता देख जड़ रह गया। उसे जूट और वृक्षों की लताओं से निर्मित बीस हजार मजबूत रस्सियों से बांधा गया था, लेकिन ये भी उसे पकड़ पाने में सक्षम नहीं थीं। समुद्र रूपी नदी की हिंसक, दानवीय लहर मानवजाति के बनाए सबसे बड़े जहाज पर भारी पड़ रही थीं। और भयानक बाढ़ इसे भी डुबोने वाली थी।

क्या यह घातक बाढ़ जानती है कि इस अंतिम नाव में क्या महत्वपूर्ण सामग्री रखी है?

यह कोई छिपी हुई बात नहीं थी कि ब्रह्मांड को खत्म कर देने वाली, विनाशकारी बाढ़ आने वाली थी। धरती पर छाए स्याह, लाल-बैंगनी बादल ऐसे लग रहे थे मानो किसी उन्मादी दिव्य चित्रकार ने पुराने रक्त से आसमान को रंग दिया हो। इंद्र के बादलों की पागल कर देने वाली दहाड़ और हिंसक बरसात ने प्रलय, दुनिया के अंत की घोषणा कर दी थी। बाघ के दांत की तरह नुकीली बूंदें आसमान से गिर रही थीं, जो मनु और उसके समर्पित अनुयायियों पर बाणों की वर्षा के समान बरस रही थीं। मनु-शिष्यों या मनुष्यों की त्वचा पर पड़ती प्रत्येक बूंद अदृश्य भाले की तरह उन्हें भेद रही थी। वीर पुरुषों और महिलाओं की यह सेना कोलाहल भरे जल में जिस चीज पर संतुलन बनाने की कोशिश कर रही थी, वो कोई सामान्य नाव नहीं थी।

यह अंतिम नाव थी। किसी बंदरगाह की अंतिम नाव नहीं। न ही किसी सेना की अंतिम नाव। न ही उस विशेष ऋतु में तट से निकलने वाला अंतिम जहाज और न ही उस रात किसी जहाज का अंतिम फेरा।

यह स्वयं सृष्टि की अंतिम नाव थी। यह वो नौका थी, जहां स्वयं पृथ्वी शरण लेने जा रही थी। अपने साथ अपने समुदाय के बीज लिए।

यह महान योद्धा, पुजारी, मुनि, दार्शनिक और राजा मनु का पराक्रम था।

यह उसकी नाव थी।

मनु की नाव।

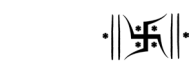

एक जहाज के विरुद्ध सौ हजार पुरुषों और महिलाओं का यह निर्भीक संघर्ष इतना बहुमूल्य था कि ईश्वर तक इसकी कल्पना नहीं कर सकता था। यह ऐसा दृश्य था जो इससे पहले

कभी इस ग्रह पर नहीं देखा गया था। और न ही फिर कभी देखा जाएगा, समय के अंत तक भी नहीं। मनु की विशाल नौका का आकार किसी भव्य नगर के समान था। लेकिन इसका उद्देश्य इतना महान था कि मानवजाति कभी इसकी थाह भी नहीं ले पाएगी।

यह एक प्रवेश मार्ग था। निरंतरता का इकलौता पुल। एक पतनशील पुराने संसार से... पुनर्निर्माण के नए सवेरे में। यह महायुद्ध प्रकृति के साहस और मनुष्य के अस्तित्व बचा पाने की कोशिश के बीच था। मानवता बिना संघर्ष किए हार नहीं मानने वाली थी—ऐसा संघर्ष जिसे स्वर्ग भी याद रखेगा। लेकिन इस साहसिक प्रयास के बावजूद बहुत कुछ तबाह हो जाने वाला था। मानवजाति द्वारा युगों में प्राप्त किया गया बहुमूल्य और अचल ज्ञान इस नौका के माध्यम से आगे नहीं जाने वाला था। प्राचीन रसायन, औषधि, विमानन, तंत्र-विज्ञान, शिल्प, औजार और आध्यात्मिकता, सब हमेशा के लिए लुप्त हो जाने वाले थे, महान बाढ़ के परिणामस्वरूप, वो सब समुद्र की तली में दब जाने वाले थे।

और फिर भी यह नाव, जैसा कि आर्यवर्त इसे जानता था, जीवन की अंतिम आशा थी। मनुष्य चाहे जितना ही भगवान के बनाए हुए अद्भुत तारों, आकाशगंगा और ज्योतिपुंजों को देखकर हैरान हो ले, लेकिन वास्तव में भगवान की बनाई सर्वश्रेष्ठ कृति जिंदगी ही है। शानदार, लचीली... जिंदगी। जीव जो दर्द महसूस करते हैं, जन्म देते हैं, आंसू बहाते हैं और असीमित प्रेम करते हैं। जीव जो स्वयं ईश्वर का प्रतिबिंब होते हैं। और इस कृति को बचाया जाना आवश्यक था।

सबसे बढ़कर।

मोटी, गुथी हुई, भीगी रस्सियां और लताएं अब मनु की सेना की बांहें, गले और मांस काट रही थीं। नगर जैसी बड़ी नाव को संतुलित रखने के लिए बांधी गई मजबूत रस्सियों का बल अब उनकी उंगलियों को काट रहा था, कंधे तोड़ रहा था और बांहों की मांसपेशियां फट रही थीं। पुरुष, महिलाएं और बच्चे सब मिलकर अपने अदृश्य, अकल्पनीय, अपराजित शत्रु से संघर्ष कर रहे थे। वे सब नश्वर हाड़-मांस के बने थे, जबकि नौका भारी लकड़ी, प्रबलित कांसे और चट्टानी पत्थर की बनी थी—यह इतनी विशाल थी कि रस्सी खींचने

वाले लोग भी इस विशाल जहाज की पूरी झलक नहीं देख पाए थे, भले ही वो अपना सिर उठाकर आसमान में कितना ही देखने का प्रयास क्यों न करें।

नौका सुमेरु पर्वत से ऊंची और उस मैदान से भी अधिक चौड़ी थी, जहां दसराजन का प्राचीन युद्ध हुआ था।

मनु लगातार अधीर हो रहा था। उसने शंख बजाकर खतरे का संकेत दिया। यह शंख तभी बजाया जाना था, जब कोई भीषण आपदा हो। और वो समय आ पहुंचा था। अपने समर्पित अनुयायियों की मौत से अधिक पीड़ादायक और कुछ नहीं हो सकता था। मनु ने अपना चेहरा, अपनी कलाई पर बंधे चमड़े से पोंछा, गहरी सांस ली और फिर से शंख बजाया, जिसकी तेज आवाज तूफानी आसमान में दबकर रह गई।

एक सुनसान और डरावनी चट्टान, जो लाल आसमान के सम्मुख कोयले सी स्याह दिख रही थी, पर खड़ा मनु अपनी आंखों पर खुली हथेलियों से ओट बनाते हुए दूर क्षितिज में देखने की कोशिश कर रहा था। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। हर गुजरते पल के साथ उसकी हताशा बढ़ती जा रही थी। वह पराजय के अपने आंसू रोकने की बहुत कोशिश कर रहा था, और एक बार फिर से, अपना पूरा दम लगाते हुए उसने शंख बजा दिया। चीखते शंख की ध्वनि क्रोधित अजगर का क्रंदन सुनाई पड़ रही थी, और मनु के दसियों हजार साथियों को लगा मानो उनके कानों में पिघलता हुआ लोहा उतर गया हो।

मनु आंखें सिकोड़कर, ऊंची लहरों के पार, क्षितिज में देखने का प्रयास कर रहा था। उसे उम्मीद थी कि उसे उसकी परछाईं दिखाई देगी, जिसे उसने सच्चा मसीहा माना था।

उसे कुछ नहीं दिखाई दिया।

'मत्स्य!' आगे को निकली हुई चट्टान पर बेचैनी से चक्कर लगाते हुए मनु चिल्लाया। यह चट्टान उसका नियंत्रण स्थल थी, जहां से वो विशाल नौका के निर्माण का निरीक्षण करता था। उसके क्लांत, भयभीत और आशावान नेत्र भीषण प्रलय के परे क्षितिज पर टिके थे। बारिश उसके मनोहर किंतु युद्ध-चिह्न से सुशोभित चेहरे पर वार कर रही थी।

अपने महत्वाकांक्षी प्रयास पर मंडराते खतरे को देखकर वो संभवत: रोने वाला था। हताशा का एक भाव इस अप्राकृतिक तूफान से लड़ने के उसके जज्बे को तोड़ रहा था।

क्या उस इकलौते इंसान ने उसे धोखा दिया था, जिस पर वो अपने प्रिय पिता—महान विवास्वन पुजारी, जितना ही भरोसा करता था? क्या उसके मित्र, मार्गदर्शक, सलाहकार, उपचारक... ने उसका साथ छोड़ दिया था?

क्या उसके प्यारे मत्स्य ने उसके साथ छल किया था?

'मत्स्य...!' ऊपर कड़कती बिजली को देखते हुए मनु चिल्लाया, उसकी बांहें फैली हुई थीं और फेफड़े फटने को तैयार थे, मानो वो आसमान तक अपनी अधीर विनती पहुंचाना चाहता था!

और फिर उसे वो दिखाई दिया। सब खत्म कर देने वाली बाढ़ में, समुद्र को चलाता हुआ, वो उसे दिखाई दिया।

लोक-नास, सबसे बड़ा समुद्री दैत्य, जिसका जिक्र कभी शक्तिशाली ब्रह्मा ने किया था, दूर लहर के साथ अपना सिर आगे निकाले बढ़ रहा था। मनु ने पहली बार उस विकराल पशु की धुंधली सी छवि देखी थी।

और वो वहीं था, अनेकों फण वाले सर्प की चमकती आंखों के बीच, निर्भीकता से खड़ा हुआ।

मत्स्य।

कहीं रोम के करीब, 2017

‘क्या तुम्हें भरोसा है, वो सच में वही है?’

उसे अपनी औपचारिक जनसभा के लिए देर हो रही थी। रोम में ही कहीं रहने वाला बिग मैन आज सुबह असामान्य रूप से क्रोधित था। जल्दी सुबह आए एक फोन ने उसकी नसों में तनाव उत्पन्न कर दिया था। चाय के प्याले को अपने पवित्र होंठों तक लाते हुए उसके हाथ कांप रहे थे।

पृथ्वी के सबसे बड़े पुजारी के रूप में लाखों लोगों के लिए पूजनीय, वह आदमी दुनिया की सबसे बड़ी धन-संपत्ति का स्वामी था। इस ग्रह के सबसे ताकतवर पुरुषों और महिलाओं के लिए वो आध्यात्मिक देव-पुरुष था। वो न सिर्फ किसी एक आदमी या समुदाय की, बल्कि पूरे महाद्वीप की किस्मत बदल सकता था। उसके द्वारा दिया गया एक संदेश परमाणु युद्ध छिड़वा सकता था, तो दशकों से चले आ रहे रक्त-संघर्ष को बंद भी करवा सकता था।

बिग मैन किसी भी रूप में सामान्य इंसान नहीं था। वह पूर्ण सत्ता, निर्विवादित साम्राज्य, श्रेष्ठता और वैश्विक नियंत्रण का चमकता हुआ प्रतीक था। लेकिन फिर भी धुर पूर्व के एक 34 वर्षीय युवक ने इस बिग मैन को परेशान कर दिया था।

सच में परेशान।

इस बेचैनी की बिग मैन को आदत नहीं थी। उसने क्रोध से कनिष्ठ पादरी को घूरा, जो विनम्रता से बिग मैन को याद दिलाने अंदर आया था कि उसके सार्वजानिक दर्शन का समय निकला जा रहा था, कि हजारों लोग उसकी बालकनी के नीचे उसकी एक झलक पाने के लिए खड़े थे। बिग मैन को इस तनाव से बचने के लिए कुछ तंबाकू की तलब महसूस हुई।

उस प्राचीन और भयानक भविष्यवाणी के 1,600 साल बाद, वो पावन देवता शायद आ पहुंचा था। और बिग मैन की कुर्सी के लिए यह सबसे भयानक खबर थी।

मुझे रेग को फोन करना चाहिए।

'गुड मॉर्निंग, योर होलीनेस,' दूसरी तरफ से किसी सभ्य इतालवी आवाज ने कहा। 'आपको मुझे फोन करने की जरूरत नहीं थी, सर। मैं आप ही के पास आ रहा था।' रेग मारिअनी पसीने से तर हो रहा था।

बहुत कम लोग बिग मैन को उतने करीब से जानते थे, जितना रेग। इसलिए वो जानता था कि वो दुनिया के सबसे ताकतवर और सबसे खतरनाक धार्मिक नेता से बात कर रहा था।

'क्या तुम्हारा काम हो गया, रेग?' बिग मैन ने शांति से पूछा।

'नहीं... नहीं, योर होलीनेस, अभी नहीं हुआ।'

'तो तुम यहां क्यों आना चाहते हो, माय सन?'

वहां कुछ पल खामोशी रही।

'जैसा आप कहें, सर,' रेग ने अपना गला साफ करते हुए कहा। अभी के लिए, वो उसके साम्राज्य में 'बिन बुलाया मेहमान' था।

'मेरे आशीर्वाद के लिए तभी उपस्थित होना, रेग, जब पहले तुम दिया हुआ काम पूरा कर लो।'

'जी, योर होलीनेस।'

बिग मैन अब उस लहजे में बात कर रहा था, जिससे रेग परिचित भी था और डरता भी था। वो ऐसे लहजे में दिए आदेशों के क्रूर और हिंसक परिणामों का साक्षी रहा था।

'मेरी तरफ से मास्केरा बिआंका को याद दिला दोगे न, रेग? उसे याद दिला देना कि वो उसके लिए की गई मेरी प्रार्थनाओं की वजह से ही जीवित है।'

'मैं उसे बता दूंगा, योर होलीनेस।'

'उसे याद दिला देना कि उसके बुरे कामों को ईश्वर इसीलिए माफ करता रहा है क्योंकि उसने बड़े उद्देश्य के लिए काम आने का वादा किया था। अगर वो उस दिव्य लक्ष्य में असफल रहता है, तो दुनिया में उसके रहने के लिए कोई जगह नहीं बचेगी।'

रेग जड़ हो गया। केवल बिग मैन ही यूरोप के क्रूर माफिया सरगना को ऐसी भयानक धमकी दे सकता था।

फोन कटने की आवाज सुनकर रेग को राहत महसूस हुई। वो बहुत से शक्तिशाली आदमियों का भयानक अंजाम देख चुका था, जो बिग मैन के कार्य में असफल रहे थे। हालांकि वह स्वयं बिग मैन की सेवा में सालों लगा चुका था, लेकिन रेग आज भी वहां उतना ही असुरक्षित महसूस करता था, जितना वो पहले दिन था।

इससे पहले कि वो राहत की सांस ले पाता, उसके फोन की घंटी दोबारा से बजी। दोबारा से बिग मैन की आवाज सुनकर रेग तनाव में आ गया। लेकिन इस बार आवाज रूखी नहीं थी, बल्कि बिग मैन कुछ हिसाब लगा रहा था। उसकी आवाज में अनिश्चितता और कंपन था।

‘बताओ मुझे रेग, क्या तुम्हें सच में लगता है, वो वही है? क्या तुम्हें सच में लगता है कि यह लड़का वही भविष्यवाणी वाला देवता है?’

वहां कुछ पल फिर से खामोशी रही। रेग जानता था कि बिग मैन से कम से कम शब्दों में बात की जानी चाहिए।

‘जी, योर होलीनेस। मैं मानता हूं कि यह वही है।’

रेग वो सच बोलने से पहले रुका, जो बिग मैन का सबसे बड़ा डर था।

‘देवता वापस आ चुका है।’

हड़प्पा, 1700 ईसापूर्व

रक्त-वर्षा

हड़प्पा सेना के दो सौ घुड़सवार तेज चाल से चल रहे थे। बरछी लिए पचास सैनिक आगे थे। पचास तलवारबाज बाहरी घेरे में थे और सौ धनुर्धर दोनों तरफ से सुरक्षा प्रदान करते हुए चल रहे थे। उनके मध्य में एक भारी, पहियों वाला लोहे का पिंजरा सरक रहा था, जिसे सोलह घोड़े खींच रहे थे। मजबूत लकड़ी और मोटे कांसे की छड़ वाला यह पिंजरा विशेष रूप से शेरों को रखने के लिए बनाया गया था। लेकिन आज उसमें कोई बड़ी बिल्ली कैद नहीं थी। अपने वर्तमान रूप में, वो कैदी शेरों से भी अधिक बर्बर था।

उस उन्मादी सेना को देखकर ही डर लग रहा था। हड़प्पा के ये योद्धा अब विक्षिप्त और अनियंत्रित रूप से रक्त-पिपासु थे। उनकी आंखें लाल और चौड़ी थीं, और वो लगभग बिलकुल भी पलक नहीं झपका रहे थे। उनके मुंह से मतांध भेड़ियों की तरह लार टपक रही थी। वो अपने घोड़ों के समान ही गुर्रा रहे थे, उनका सम्मिलित स्वर लाल आसमान की हिंसक गरज की प्रतिक्रिया लग रहा था।

भारी शस्त्रों से सुसज्जित, प्रत्येक हड़प्पा घुड़सवार की कमर में, हड्डियों को काट देने वाली भारी तलवार बंधी थी। आगे चलने वाले प्रहरी अपने सिरों के ऊपर बड़ा भाला गोल-गोल घुमा रहे थे, उनका भाला दूर पूर्व में रहने वाले एक-सींग के गेंडे की खाल तक चीर सकता था। धनुर्धरों के बाण हड़प्पा के रसायन-शास्त्रियों द्वारा बनाए नीले जहर में डूबे थे। यह हड़प्पा सिपाहियों की चयनित टुकड़ी थी, जिनका चयन स्वयं नई रानी ने किया था। मृत-कारावास में जाने वाले ताकतवर कैदी की सुरक्षा में वो कोई ढील नहीं छोड़ना चाहती थी। अंतिम बार। वो वहां अंतिम बार जा रहा था, दोबारा न लौटने के लिए।

लेकिन प्रियम्वदा भी पागलपन के ऐसे ही उन्माद में थी, जैसा अधिकांश महत्वाकांक्षी सम्राटों को होता है। जब भगवान तक सूर्य को नहीं पकड़ पाए, तो वो कैसे उसे बंदी बनाकर रख सकती थी?

उसका सिर उसके बदन से कटकर, बहुत दूर आगे लाल मिट्टी पर जाकर गिरा। वो बाण न जाने कहां से आया था, जिसने इतनी सफाई से अपना काम किया था। आगे चलने वाले दस्ते के नेता का सिररहित धड़ लड़खड़ाकर गिरा। उसके कटे सिर से रक्त का छोटा सा फव्वारा फूट पड़ा।

पल भर में ही दूसरा सिर भी कट गया। और फिर एक और। और फिर एक और। घबराए और डरे हुए सिपाही अपनी श्रृंखला तोड़ने लगे, उनकी आंखें अदृश्य हमलावर को खोज रही थीं। एक काबिल धनुर्धर इस सशस्त्र दल पर यूं टूट रहा था, मानो मुर्गियों के समूह में बिल्ली घुस आई हो।

भले ही वो हड़प्पा की फौज के श्रेष्ठ सिपाही हों, लेकिन उनका पुजारी परिवार के अपने प्रशिक्षित योद्धाओं से कोई मुकाबला नहीं था।

उनकी अपनी शिष्या। मनु की करीबी मित्र और उसकी महान सैन्य अध्यक्ष।

सुंदर। शूरवीर।

तारा।

गुन, शा और अप के दिए नशे से धुत्त होने के बावजूद हड़प्पा की सेना किसी छिपे हुए धनुर्धर से बिना संघर्ष किए भागने को तैयार नहीं थी, भले ही वो धनुर्धर कितना ही दक्ष क्यों न हो, या इस मामले में कहें तो, कितनी ही दक्ष क्यों न हो। एक प्रशिक्षित और उद्दंड टुकड़ी, सौ घुड़सवार धनुर्धर, सब उस दिशा में देख रहे थे, जहां से छिपे हुए हमलावर ने उनके दल पर वार किया था। अपने चलते घोड़ों को रोके बिना ही, इन समर्थ धनुर्धरों ने अपने रकाब पर खड़े होकर हमलावर की दिशा में बाणों की वर्षा कर दी। तारा के पास अब चट्टान के पीछे शरण लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं था।

लेकिन हमला शुरू हो चुका था। महान विवास्वन पुजारी को बचाने का साहसिक उपक्रम।

'जैसे कि हमने योजना बनाई थी, हमारा पहला लक्ष्य होगा देवता को आजाद कराना,' सोमदत्त ने अपने मुट्ठी भर साथियों को आगे बढ़कर आक्रमण करने से पल भर पहले याद दिलाया। 'एक बार उनके आजाद होने पर, इनमें से कोई भी सिपाही टिक नहीं पाएगा। देवता स्वयं इन सबका सफाया कर देंगे।'

'लेकिन स्वामी, मेरी धृष्टता के लिए क्षमा करें... देवता मांस के एक टुकड़े से अधिक कुछ नहीं लग रहे हैं!' एक युवा योद्धा ने कहा।

वो लोग कांसे और लकड़ी की मजबूत सलाखों के पीछे देख पा रहे थे। देवता का बेजान शरीर पिंजरे की तली पर पड़ा था, और वो रास्ते में आने वाले हर गड्ढे पर उछल जाता। उसके परितप्त बदन पर नाममात्र को भी खाल नहीं थी। उसके पिंजरे की लकड़ी की दीवार उसी के रक्त से सनी थी। वह सिर्फ कच्चे मांस का ढेर था।

'मेरा भरोसा करो, मेरे साहसी मित्रों। मैंने ताकतवर विवास्वन पुजारी को बुरे से बुरे हालात में देखा है,' सोमदत्त ने जवाब दिया। 'मैं मानता हूं कि उनकी वर्तमान स्थिति शायद मनुष्य की पीड़ा सहने या उसकी कल्पना तक करने से परे हैं, लेकिन फिर भी मुझे उनके अदम्य

बल पर भरोसा है। उन्हें तब तक नहीं हराया जा सकता, जब तक वो स्वयं न चाहें। उन्हें तब तक नहीं मारा जा सकता, जब तक वो स्वयं मरने का निर्णय न कर लें। उन्हें तब तक युद्ध में नहीं हराया जा सकता, जब तक कि शत्रु उनका स्नेहिल न हो।'

उसके मुट्ठी भर अनुयायी सुन रहे थे। वह जानता था कि उसके पास अधिक समय नहीं था। और सोमदत्त जानता था कि उन्हें यहां तलवार से लड़ने का बहुत कम समय मिलेगा।

'हड़प्पा के सबसे शूरवीर सिपाहियों से मेरा यही कहना है कि देवता के पिंजरे का ताला तोड़ दो। उनकी जंजीरें काट दो। और हमारा मसीहा स्वयं उदित हो जाएगा। वो हम सबको आजाद करवाएगा। और हड़प्पा को भी इसके अभिशाप से मुक्त करवाएगा।'

हड़प्पा के सैनिक अब विवास्वन पुजारी के भारी पिंजरे के आसपास फैले हुए थे। तारा की टुकड़ी के सुनियोजित स्थान पर बैठे धनुर्धर भी अब उसके पास आ गए थे और वो सब मिलकर हड़प्पा के घुड़सवारों को तितर-बितर कर रहे थे। तारा के शुरुआती हमले के पल भर बाद ही, दो दर्जन से अधिक घुड़सवार धराशायी हो चुके थे—बेरहम बाणों ने या तो उनका सिर धड़ से अलग कर दिया था या उनका सीना ही चीर दिया था। उनकी पाशविक उत्तेजना बढ़ रही थी। हालांकि उनकी प्रभावकारिता कम होती जा रही थी।

दिशा और लक्ष्य भटककर, अदृश्य शत्रु से घबराए वो चारों तरफ से मनुष्यों और घोड़ों के बहते रक्त के मध्य घिरे थे। पगलाए हुए वो घुड़सवार अब आपस में ही एक-दूसरे से टकरा रहे थे। एक घुड़सवार ने अपना संतुलन खोया, वो दूसरे के रकाब में उछलकर, गुलेल से निकले पत्थर की तरह दूर जाकर गिरा। और पीछे से आते घुड़सवारों के नीचे कुचला गया। एक क्रोधित सिपाही अपना बचा-खुचा होश भी खोकर, अपना भाला अपने ही साथी को मार बैठा, जो उसके अधिक करीब आ गया था। असाधारण निशानेबाजों ने अपना लक्ष्य हासिल कर लिया था। हड़प्पा की सेना में भय और कोलाहल था।

और इस अपराजित दिखती सेना का बड़ा भाग अब भागने की तैयारी करता दिखाई दे रहा था।

ये जानते हुए कि यह उनका एकमात्र अवसर था, सोमदत्त की टुकड़ी के पंद्रह घुड़सवारों ने हड़प्पा की फौज पर सामने से हमला बोल दिया। उन्हें देखकर ऐसा लग रहा था मानो भेड़ों के झुंड में भेड़िया घुस आया हो। अपनी तलवारें भांजते हुए, सोमदत्त के युवा योद्धा अपने रास्ते में आने वाले दुश्मन सिपाहियों को मारते काटते हुए आगे बढ़ रहे थे। उन्हें अपने स्नेही देवता के पिंजरे तक पहुंचना था।

तारा के धनुर्धर भी अब अपना स्थान छोड़कर, अपने साथी योद्धाओं की सहायता के लिए घोड़ों पर सवार होकर युद्ध क्षेत्र की तरफ बढ़ रहे थे।

लेकिन यह आसान नहीं होने वाला था। साहसी और धृष्ट बचाव अभियान के एक-तरफा आक्रमण के बीच भी, हड़प्पा का एक वरिष्ठ सेनाध्यक्ष वापस से अपने बल को एकत्र कर रहा था। एक विशाल आदमी, जिसका चेहरा लाल और काले रंग से पुता हुआ था, उसकी आंखों में पागलपन और क्रूरता की चमक थी।

'वापस लड़ो...!' अपनी बिखरती सेना को उसने चिल्लाकर आदेश दिया। वो अपने बड़े से भाले को तेजी से घुमा रहा था, जिससे कोई भी हमलावर उस तक न पहुंच सके। 'वापस लड़ो, कायरों...!' वो पहिये वाले पिंजरे की तरफ बढ़ रहा था। उसके बहुत से जुझारू योद्धाओं ने अब अपने घोड़े वापस मोड़ लिए थे, और वो नए जोश के साथ अपने सेनाध्यक्ष के पीछे दौड़ रहे थे।

अभी के लिए, हार-जीत का अनुमान लगाना मुश्किल था।

सोमदत्त ने दूर से इस अपराजेय और गंभीर खतरे को देखा। उसके दो युवा योद्धा पिंजरे के काफी करीब थे, और वो किसी भी पल पतित देवता को आजाद कराने ही वाले थे। लेकिन हड़प्पा का भीमकाय सेनाध्यक्ष केंद्र की तरफ ही बढ़ रहा था, और सोमदत्त जानता

था कि उसके वीर योद्धा इस अनुभवी दैत्य और इसके प्रशिक्षित दल का सामना नहीं कर पाएंगे। वो उनसे बहुत दूर था, और चाहकर भी कुछ नहीं कर सकता था। वो अपने श्रेष्ठ दांव की ओर मुड़ा।

'तारा...!' सोमदत्त चिल्लाया।

तारा ने अपने घोड़े की काठी पर पीठ के बल गिरते हुए आते हुए भाले से स्वयं को बचाया, और उसी मुद्रा से उसने अपने बाएं हाथ से अपने हमलावर के पेट में कृपाण भी घोंप दी। उसके दाहिने हाथ में फरसा था। तारा उभयहस्त थी और दोनों हाथों से एक ही साथ लड़ाई कर सकती थी। वो सोमदत्त की तरफ मुड़ी और युद्ध के कोलाहल के बीच भी, उसकी नजरों ने वो देख लिया, जिसे दिखाने की कोशिश सोमदत्त कर रहा था। तारा को तुरंत ही हालात की गंभीरता का अहसास हो गया। दानवीय सेनाध्यक्ष और उसके आदमियों को रोका जाना जरूरी था!

पागल सेनाध्यक्ष तक पहुंचने के लिए तारा ने छोटा रास्ता लिया, हालांकि फिर भी उसे शत्रुओं, रक्त और संघर्ष के भारी मार्ग से गुजरना पड़ा। एक शानदार घुड़सवार और स्वयं विवास्वन पुजारी की सक्षम शिष्या, तारा युद्ध-देवी थी। उसने शत्रुओं के कंधों पर से यूं अपना रास्ता बनाया जैसे पानी में से शार्क निकलती है।

'ईईइययययआआआ...' तारा अपने घोड़े की जीन पर खड़ी होती हुई चिल्लाई और फिर वो हड़प्पा के भीमकाय सेनाध्यक्ष पर लपकी। कुछ पल के लिए तारा हवा में ही थी, उसका लंबा फरसा शत्रु के गले पर निशाना लेने के लिए तैयार था, उसके सुंदर, रक्त में भीगे केश हवा में उड़ रहे थे।

लेकिन यह शत्रु बाकी सबकी अपेक्षा अधिक मजबूत और दक्ष था। भीमकाय सेनाध्यक्ष अपने घोड़े से उछला और तारा के मध्यपट पर अपनी बलिष्ठ लात से वार किया। तारा बीच रास्ते में ही जमीन पर गिर गई, वो हांफ रही थी।

लाल और काले रंग से पुता हुआ दानव क्रोध से कांप रहा था। हवा में रक्त की दुर्गंध और मरते आदमियों की कराह उसकी पाशविकता को और हवा दे रही थीं। उसने अपने सिर का मुकुट उतार फेंका और अपना कवच फाड़ कर अपना बलिष्ठ शरीर दिखाया। वो

वास्तव में एक पिशाच था। वो स्वयं अपने चेहरे पर हिंसक तरीके से थप्पड़ मारने लगा। वो शैतान की तरह गुर्रा रहा था और उसने जंजीर से बंधी नोंकदार छड़ निकाली। वो हिंसक तरह से उसे हिलाते हुए तारा का सिर फोड़ने की कोशिश करने लगा।

छड़ की जंजीर तारा की कनपटी से बाल भर की दूरी पर आकर लगी, जब वो मिट्टी पर पलटी मारकर वार से बचने की कोशिश कर रही थी। छड़ रक्त से गीली मिट्टी में गढ़ गई, और उसे वहां से निकालने में पल भर लगा। इतना समय शेरनी के पलटवार के लिए पर्याप्त था। उसने अपने बालों में से दो घातक जहर बुझी सुइयां निकालीं। वो नागिन की तरह अपने शिकार पर लपकी, लेकिन उस दैत्य ने तारा का गला पकड़ लिया। उसकी बांह बहुत लंबी थी और उसने पूरी बांह पर तांबे का मोटा कवच पहना हुआ था, और तारा बहुत प्रयास करके भी उसकी नग्न त्वचा तक नहीं पहुंच पा रही थी। उसकी पकड़ मजबूत होती जा रही थी और तारा को महसूस हुआ कि उसकी जिंदगी खत्म होने वाली थी।

तभी कुछ ऐसा घटा जिसकी तारा ने कल्पना तक नहीं की थी।

दानव का मुंह दम घुटने की पीड़ा से खुल गया। अविश्वास से, तारा को रक्त में भीगा हुआ इंसानी पंजा दिखाई दिया और फिर देखते-देखते ही पूरी बांह भीमकाय सेनाध्यक्ष के पेट से निकल आई। किसी ने उस दानव को अपने हाथों से भेदकर, चीर दिया था।

मरते हुए दानव की पकड़ तारा के गले से ढीली हुई, और वो उस जीव की झलक देख पाई जिसने ऐसी वीभत्स हत्या को अंजाम दिया था। उसकी आधी बांह अभी भी मृत हड़प्पा सेनाध्यक्ष के उदर में धंसी हुई थी। यह सर्वाधिक अमानवीय हत्या थी, जो तारा या किसी अन्य ने देखी थी।

रक्त में डूबा हुआ एक आदमी, उसकी खाल इस तरह उतरी हुई थी कि वो पहचान में भी नहीं आ रहा था, उसकी एक आंख पिघल गई थी और दूसरी आदिकालीन ब्रह्म-राक्षस की तरह चमक रही थी। वह सेनाध्यक्ष की लाश के पीछे खड़ा था। उस आदमी को पहचानने में तारा को कुछ पल लगे।

उसकी आंखें पहिये वाले पिंजरे की तरफ मुड़ीं।

उसका भारी-भरकम दरवाजा खुला हुआ था। उसके बड़े ताले टूट चुके थे।

विवास्वन पुजारी अब देवता नहीं था। वो प्राचीन ग्रंथों में वर्णित किसी घिनौने और स्याह राक्षस से भी अधिक बुरा दिखाई दे रहा था।

अपने सेनाध्यक्ष की जघन्य हत्या से भयभीत, एक और सिपाही ने अपनी तलवार से विवास्वन पर वार किया। किसी माहिर योद्धा की तरह, विवास्वन वार से बचा, और हमलावर की कलाई पकड़कर उसकी कोहनी, उसी के चेहरे में घुसाते हुए तोड़ दी। हड़प्पा का सिपाही तड़पकर जमीन पर गिर गया। लेकिन संहार अभी रुका नहीं था। विवास्वन पुजारी ने धीरे से अपना घुटना गिरे हुए सिपाही की कमर पर रखा, उसकी तलवार उठाई और किसी मंजे हुए शल्य चिकित्सक की तरह उस आदमी का माथा उसकी एक कनपटी से दूसरी कनपटी तक चीर दिया। वो आदमी दर्द से चिल्लाया और उसके माथे से उबलता रक्त उसकी भवों से होते हुए चेहरे पर गिरने लगा। और फिर, सबको अविश्वास और सदमे में डालते हुए, विवास्वन पुजारी ने सिपाही के बाल पकड़कर उसकी खोपड़ी को, उसके कंधों तक उतार दिया। सिपाही मरने से पहले बदहवासी से चिल्लाया—वो अपने घाव से नहीं बल्कि उस दर्द से चिल्ला रहा था, जिसे सहन करने की उसके शरीर को आदत नहीं थी।

पल भर में ही तारा को अपने किए पर पछतावा हुआ। उसने जल्दी से सोमदत्त से नजर मिलाई, और वो भी शायद यही सोच रहा था।

वो, जिसे आजाद नहीं होना था, आजाद हो गया था।

हड़प्पा का सूर्य हमेशा के लिए अस्त हो चुका था।